गुरु रविदास पचासा

(गुरु रविदास जी की वंदना और कीर्ति-दशक सहित)



देवचंद्र भारती 'प्रखर'

गुरु रविदास वाणी

ऐसा चाहूं राज मैं, जहां मिलै सबन को अन्न।
छोट बड़ो सब सम बसैं, रविदास रहें प्रसन्न।।

पराधीनता पाप है, जान लेहु रे मीत।
रविदास दास पराधीन सौं, कौन करैं हैं प्रीत।।

रविदास श्रम करि खाइए, जौं लौं पार बसाय।
नेक कमाई जो करै, कबहुं न निहफल जाय।।

गुरु रविदास पचासा



रचनाकार

देवचंद्र भारती 'प्रखर'

पुस्तक का नाम : Guru Ravidas Pachasa (गुरु रविदास पचासा)
लेखक : **देवचंद्र भारती 'प्रखर'**
ISBN : 978-81-986913-1-6
प्रकाशक : **आंबेडकरवादी साहित्य प्रकाशन**
मकान नं. 14, साईं वैली, धनवारा,
मोहनलालगंज, लखनऊ (उ.प्र.)-226301
मोबाइल : 9454199538, ई-मेल : ambedkarvadisahitya@gmail.com
वेबसाइट : www.ambedkarvadisahitya.com
प्रकाशन वर्ष : 2026
कॉपीराइट © : सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन
सहयोग राशि : 25/ रूपये

इस पुस्तक के समस्त अधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी अंश किसी भी रूप में मुद्रित, इलेक्ट्रॉनिक अथवा डिजिटल माध्यम से पुनर्प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

अपनी बात (कवि की कलम से)

गुरु रविदास पचासा मेरे लिए केवल एक साहित्यिक रचना नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना के प्रति मेरी वैचारिक प्रतिबद्धता की अभिव्यक्ति है। इसकी रचना मैंने वर्ष 2014 में इस उद्देश्य से की थी कि संतशिरोमणि गुरु रविदास की समतावादी और मानवतावादी दृष्टि को समकालीन सामाजिक यथार्थ से जोड़कर पाठकों तक पहुँचाया जा सके। यह कृति मेरे लिए कविता से अधिक सामाजिक हस्तक्षेप का माध्यम रही है।

वर्ष 2018 में इसकी ऑडियो रिकॉर्डिंग कराकर इसे यूट्यूब चैनल ''आंबेडकरवादी साहित्य'' पर प्रकाशित किया

गया। डिजिटल मंच के माध्यम से इस रचना को व्यापक श्रोता वर्ग मिला और यह प्रमाणित हुआ कि वैचारिक साहित्य की सामाजिक आवश्यकता आज भी बनी हुई है।

वर्ष 2020 में इसे कविता–संग्रह ''दलित जागरण'' में संग्रहीत किया गया। अब आंबेडकरवादी साहित्य प्रकाशन की स्थापना के बाद इसे स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित करना मेरे लिए रचनात्मक यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। यह प्रकाशन मेरे संकल्प की निरंतरता और वैचारिक उत्तरदायित्व का प्रमाण है।

– देवचंद्र भारती 'प्रखर'

गुरु रविदास वंदना

(मानव छंद में गुरु रविदास जी की स्तुति)

शांत करें मन का संत्रास।
संत शिरोमणि गुरु रविदास।।1।।

मन ही पूजा मन ही धूप।
मन ही देखे सहज स्वरूप।।
शीघ्र बनाते मन को दास।
संत शिरोमणि गुरु रविदास।।2।।

बेगमपुर में हो आवास।
घर–घर हो समता का वास।।
भ्रमित चित्त में भरें प्रकाश।
संत शिरोमणि गुरु रविदास।।3।।

प्रज्ञा से पूरित हैं आप।
करुणा से हरते संताप।।
करें शील से दुःख का नाश।
संत शिरोमणि गुरु रविदास।।4।।

जन-जन में हो मैत्री भाव।
'प्रखर' सत्य का रहे प्रभाव।।
न्याय भावना करे विकास।
संत शिरोमणि गुरु रविदास।।5।।

गुरु रविदास पचासा

(दोहा–चौपाई छंद में गुरु रविदास जी का महिमा गान)

।। दोहा छंद ।।

सतगुरु के सत्ज्ञान से, कुंठित मति गतिशील।
मन की माया शून्य हो, काया बने सुशील।।1।।

संत शिरोमणि नाम है, धाम अमल अविकार।
महिमा गुरु रविदास की, अमित अनूप अपार।।2।।

।। चौपाई छंद ।।

जय रविदास आस के दानी।
जय गुरुवर जय हो वरदानी।।1।।
हे दीनों के सच्चे दाता।
तुमसे यह जीवन सुख पाता।।2।।
जब चौदहवीं सदी उदासी।
तुम बालक बन आये काशी।।3।।
माघ महीने की पुनवासी।
झूम उठे काशी के वासी।।4।।

रघुनंदन कर्मा के लाला।
मंडुवाडी में बचपन पाला।।5।।

सीरकरहियाँ धाम तुम्हारा।
सुखदायक है नाम तुम्हारा।।6।।

संत शिखर तुमने मन साधा।
अपनी इच्छाओं को बाँधा।।7।।

ढोंगी सब तुमको उलझाये।
तुम उनकी उलझन सुलझाये।।8।।

राजा वीर सिंह हरसाया।
जब तुमसे हर उत्तर पाया।।9।।

तुमने उसका भरम मिटाया।
वेदों का हर भेद बताया।।10।।

नीच किसी की जाति नहीं है।
झूठे ने यह बात कही है।।11।।

चर्चित है तुम्हारी बानी।
पंडित वह है जो है ज्ञानी।।12।।

क्या है तिलक जनेऊ पोथी।
शील बिना सब चीजें थोथी।।13।।

सच में पंडितराज तुम्हीं हो।
गुरुओं के सिरताज तुम्हीं हो।।4।।

बिंदु मिले तो बनती रेखा।
अंधेरे में किसने देखा।।15।।

यज्ञ हवन से क्या होता है।
चारों ओर धुआँ होता है।।16।।

कथन तुम्हारा सिद्ध सही है।
वचन अभी प्रसिद्ध वही है।।17।।

सूखा सुमन नहीं खिलता है।
घी जलता तो जी जलता है।।18।।

संगम पर लगता है मेला।
अमृत पाने का है खेला।।19।।

कुंभकथा है बहुत पुरानी।
लोगों की जानी पहचानी।।20।।

लेकिन तुमने कहा निरंतर।
यह तो है केवल आडंबर।।21।।

बूँद गिरी थी अगर सुधा की।
तो अब है माटी वसुधा की।।22।।

संत कबीर लहरतारा में।
नामी निर्गुण की धारा में।।23।।

वाद विवाद हुआ तब जाने।
संत शिरोमणि तुमको माने।।24।।

आस्तिक सगुण और निर्गुण हैं।
नास्तिक जैसा तुममें गुण है।।25।।

ईश्वर शब्द भरम की छाया।
जग सच्चा है ईश्वर माया।।26।।

भारत में था मुस्लिम शासन।
दिल्ली पर लोदी का आसन।।27।।

जहाँपनाह सिकंदर लोदी।
इस्लामी था सगुण विरोधी।।28।।

दासों ने जब खबर सुनाया।
लोदी अपना होश गँवाया।।29।।

जब तुमने उसको समझाया।
तब वह अपना शीश झुकाया।।30।।

संत अनोखे थे गुरु नानक।
काशी में आ गये अचानक।।31।।

भेंट हुई तुमसे तो बोले।
खुलकर मन की बातें खोले।।32।।

पश्चिम – पूरब अंत मिले थे।
जिस दिन दोनों संत मिले थे।।33।।

तुमने उनको ऐसा जीता।
भूल गये वह भगवत गीता।।34।।

किनाराम नाम से नागा।
तुमसे बाँधे मन का धागा।।35।।

चंचल मन के छंद तुम्हीं हो।
सच में परमानंद तुम्हीं हो।।36।।

सूर रहीम बिहारी क्या हैं।
तुम हीरा हो सब ताँबा हैं।।37।।

तुलसी हैं कवियों में नामी।
तुम कवियों के सच्चे स्वामी।।38।।

राणा सांगा राजस्थानी।
झाली बाई उसकी रानी।।39।।

नाम तुम्हारा सुनकर आई।
तुमको भी चित्तौड़ बुलाई।।40।।

उसके आदर की परछाईं।
पुत्रवधू थी मीराबाई।।41।।

मीरा ने जब तुमको जाना।
उसने तुमको गुरुवर माना।।42।।

आंबेडकर जब परिचय पाये।
प्रथम जयंती वह मनवाये।।43।।

बहुजन अब भी रीत निभाएँ।
जन्म दिवस हर साल मनाएँ।।44।।

हिंदू सिक्ख बौद्ध जन सारे।
बोलें तुम्हारे जयकारे।।45।।

जीवन – चरित विचित्र तुम्हारा।
घर–घर में है चित्र तुम्हारा।।46।।

राह तुम्हारी जो भी आए।
राहें जीवन की वह पाए।।47।।

जो भी तुम पर ध्यान लगाए।
उसका ध्यान विमल हो जाए।।48।।

जो पढ़ता रविदास पचासा।
उसके मन से मिटे निराशा।।49।।

गुरु कीर्तन 'प्रखर' को प्यारा।
अमर रहे गुरु प्रेम हमारा।।50।।

।। दोहा छंद ।।

मन चंगा ये हो गया, और नहीं कुछ आस।
पत्नी जननी तात सहित, हृदय बसें रविदास।।1।।

रविदास कीर्ति-दशक

जन्म हुआ जिस रोज धरा पर, अंबर ने तब रूप संवारा।
आंचल में जब चांद खिला तब, श्वेत हुआ हर लाल सितारा।।
हाल बड़ा खुशहाल हुआ हर, मानव ने वह तेज निहारा।
आज यही दुनिया कहती गुरु, संत शिरोमणि नाम तुम्हारा।।

यौवन से भरपूर रही वह, सुंदर यौवन की रसधारा।
नैन मिलाकर चौन दिये तुम, मोह विहीन विचार तुम्हारा।।
हार गयी हर कामपरी जब, भी तुमने मन जोड़ निहारा।
आज यही दुनिया कहती गुरु, संत शिरोमणि नाम तुम्हारा।।

जाति बखान किये जब ब्राह्मण, नीच रखे जब नाम तुम्हारा।
अर्थ अनर्थ किये जब मानव, व्यर्थ हुआ जब दर्शन सारा।।
सिद्ध किया तुमने सच को तब, कुंठित चिंतक चित्त सुधारा।
आज यही दुनिया कहती गुरु, संत शिरोमणि नाम तुम्हारा।।

संत कबीर बड़े मनभावन, पावन ज्ञान स्वरूप सितारा।
वाद-विवाद हुआ तुमसे तब, ध्यान लगाकर हृदय हारा।।
संत महान कहे तुमको वह, लोक तुम्हारा पांव पखारा।
आज यही दुनिया कहती गुरु, संत शिरोमणि नाम तुम्हारा।।

लोग अछूत रहे दुःख में जब, डूब गया हर ओर किनारा।
धीरज संयम से तुमने तब, हृदय का हर भाव निखारा।।
बुद्धि विवेक विचार जगाकर, दूर किये मन का अंधियारा।
आज यही दुनिया कहती गुरु, संत शिरोमणि नाम तुम्हारा।।

शील विहीन समाज हुआ जब, लाज विहीन हुआ दुखियारा।
लोचन में करुणा भरके तुम, दान किये गुण का उजियारा।।
त्याग तपोमय कीर्ति हुई तब, गूंज उठा जग में जयकारा।
आज यही दुनिया कहती गुरु, संत शिरोमणि नाम तुम्हारा।।

धर्म हुआ जब घोर अनैतिक, ढोंग हुआ जब धार्मिक नारा।
ग्रंथ किये गुणगान अलौकिक, लौकिक लोक हुआ तब खारा।।
सम्यक धम्म किये तुम धारण, जीत गया तब सत्य दुबारा।
आज यही दुनिया कहती गुरु, संत शिरोमणि नाम तुम्हारा।।

काव्य विधा जब कर्म बनी तब, नाम पड़ा कृतिकार तुम्हारा।
भावुकता तुमने ठुकराकर, बौद्धिक तार्किक शब्द उचारा।।
वैदिक खंडन रोज किये गुरु, पा करके तुम निर्गुण धारा।।
आज यही दुनिया कहती गुरु, संत शिरोमणि नाम तुम्हारा।।

जीवनदीप जला जब से यह, चेतन रूप बना दुखियारा।
तंग हुआ जब जीव सदा तब, शोध किया हर रोज विचारा।।
मीट बना सुख जीवन का अब, छंद करे गुरु का जयकारा।
आज यही दुनिया कहती गुरु, संत शिरोमणि नाम तुम्हारा।।

शोधक शोध किये जब भी तब, शुद्ध मिला इतिहास तुम्हारा।
बुद्ध स्वरूप दिखा तुममें नित, बौद्ध विरासत का गुण प्यारा।।
श्प्रखरश जान गये तुमको अब, तेज हुई यह जीवन धारा।
आज यही दुनिया कहती गुरु, संत शिरोमणि नाम तुम्हारा।।

(मत्तगयंद सवैया छंद)

गुरु रविदास जी की उपासना

मन में बसे हमारे, गुरु रविदास।
किसके लिए करेंगे, हम उपवास।।

जिनके बल पर साहस, करे विकास।
उनको पाकर क्यों हम, रहें उदास।।

गुरुजी की वाणी है, परम प्रमाण।
उन्हें छोड़कर कैसे, सुनें पुराण।।

भक्ति भावना का वह, किये विरोध।
हम यह दोष करें क्यों, पढ़कर शोध।।

गुरु सच्चे साधक थे, संत महान।
हम क्यों बाधक जैसा, रखें निशान।।

गुरुजी में दुनिया की, शक्ति अपार।
किसी और से क्यों लें, शक्ति उधार।।

गुरु ने कहा निरंतर, करो विचार।
बिना विचारे क्यों हम, करें प्रचार।।

हमें प्रीत है गुरु से, गुरुवर मीत।
मीत कहां ढूंढे हम, गाकर गीत।।

गुरु ने कहा करो तुम, जीवन दान।
हम क्यों मांगे रोटी, वस्त्र, मकान।।

हम गुरु के अनुयायी, 'प्रखर' सुधीर।
घबराएं कैसे हम, नहीं अधीर।।

(बरवै छंद)

गुरु रविदास-वाणी की महिमा

यह सारी दुनिया कहती है, हमने भी यह मानी है।
जीवन का अनमोल खजाना, गुरु रविदास की बानी है।।

सोने की चाहत में जागना, सोने को पाकर सोना।
कुछ मिल जाए, तो खुश होना, कुछ खो जाए, तो रोना।
ऐसी हरकत जो करते, वे लोग सभी अज्ञानी हैं।
जीवन का अनमोल खजाना, गुरु रविदास की बानी है।।

पल भर का है मोह रंग से, रूप रात का तारा है।
गुण की पूजा होती जग में, गुण ही सबको प्यारा है।
सभ्य, सदाचारी नारी ही सच में रूप की रानी है।
जीवन का अनमोल खजाना, गुरु रविदास की बानी है।।

जो संतोष रखे, उसका पूरा होता सारा सपना।
जो सपनों में खोया रहता, खो जाता उसका अपना।
जिन आंखों में लालच है, उन आंखों में ही पानी है।
जीवन का अनमोल खजाना, गुरु रविदास की बानी है।।

रक्त बहाकर इस दुनिया में हर मानव पैदा होता।
राजा हो या रंक, सभी के साथ यहां सौदा होता।
वह उतना ही बेचारा है, जो जितना अभिमानी है।
जीवन का अनमोल खजाना, गुरु रविदास की बानी है।।

संतों में जो संत शिरोमणि, उनकी महिमा न्यारी है।
साधक, सिद्धपुरुष, सत्ज्ञानी कहती दुनिया सारी है।
'प्रखर' की यह बोधिलेखनी गुरु–बानी की निशानी है।
जीवन का अनमोल खजाना, गुरु रविदास की बानी है।

कवि परिचय

देवचंद्र भारती 'प्रखर' एक प्रतिबद्ध कवि, लेखक और चिंतक हैं। वे 'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका के संपादक तथा आंबेडकरवादी विद्वज्जनों के विशुद्ध संगठन **GOAL** के महासचिव हैं। उनका लेखन समता, सामाजिक न्याय, मानवीय गरिमा और तर्कशील चेतना के पक्ष में एक सशक्त वैचारिक हस्तक्षेप के रूप में जाना जाता है।

इस कृति में उनकी काव्य–चेतना संत रविदास जी के बेगमपुरा की कल्पना, समता, श्रम–संस्कृति, मानवीय गरिमा और सामाजिक न्याय की परंपरा से जुड़ती है। स्पष्ट भाषा, तर्कशील दृष्टि और आंबेडकरवादी वैचारिक आधार के साथ वे संत रविदास जी की लोकतांत्रिक और समतावादी वाणी को समकालीन संदर्भों में पुनर्पाठ करते हैं। गुरु रविदास पचासा में उनकी अभिव्यक्ति श्रद्धा और आलोचनात्मक विवेक का संतुलित समन्वय प्रस्तुत करती है।

"गुरु रविदास पचासा समतावादी चेतना और सामाजिक न्याय की आंबेडकरवादी वैचारिक परंपरा का सशक्त साहित्यिक दस्तावेज है। यह कृति संत रविदास की विचारधारा को समकालीन संदर्भों में प्रस्तुत करते हुए आंबेडकरवादी साहित्य विमर्श को नई दिशा देती है। आंबेडकरवादी साहित्य प्रकाशन इसे वैचारिक प्रतिबद्धता के साथ पाठकों को समर्पित करता है।"

978-81-986913-1-6
978-81-986913-1-6

आंबेडकरवादी साहित्य प्रकाशन

प्रकाशक
आंबेडकरवादी साहित्य प्रकाशन
मकान नं. 14, साईं वैली, धनवारा,मोहनलालगंज, लखनऊ (उ.प्र.) – 226301
मोबाइल : 9454199538 ई-मेल : ambedkarvadisahitya@gmail.com
वेबसाइट : www.ambedkarvadisahitya.com Rs.-25/-